Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

# मध्यकालीन हरियाणा में पारंपरिक जल प्रबंधन एवं पर्यावरणीय विरासत: ज्ञानी चोर की गुफा का ऐतिहासिक अध्ययन

**रेनू**
शोधार्थी**,** इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा।
**डॉ. नीलम रानी**
सहायक आचार्या, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा।
**प्रो. विष्णु भगवान**
लोक प्रशासन विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा।

**सारांश**

हरियाणा के रोहतक जनपद के महम नगर में स्थित 'ज्ञानी चोर की बावड़ी' मुगलकालीन स्थापत्य एवं पारंपरिक जल-संरक्षण प्रणाली का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। 17वीं शताब्दी में शाहजहाँ काल के दौरान निर्मित यह बावड़ी अपनी 101 सीढ़ियों, बहु-स्तरीय संरचना, फारसी अभिलेख तथा स्थानीय लोककथाओं के कारण विशेष ऐतिहासिक महत्व रखती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में बावड़ी के इतिहास, स्थापत्य, पर्यावरणीय महत्व तथा लोक-सांस्कृतिक पक्षों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह बावड़ी केवल जल-स्रोत नहीं थी, बल्कि यात्रियों, व्यापारियों तथा स्थानीय समाज के सामाजिक जीवन का भी केंद्र थी।

**मुख्य शब्द:** ज्ञानी चोर की बावड़ी, महम, मुगलकालीन स्थापत्य, जल-संरक्षण, बावड़ी, हरियाणा, पर्यावरणीय इतिहास, लोककथा, फारसी अभिलेख, सांस्कृतिक धरोहर।

## प्रस्तावना

भारत में बावड़ियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। विशेषकर उत्तर भारत के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में जल-संरक्षण हेतु बावड़ियों का निर्माण किया जाता था। मध्यकालीन काल में बावड़ियाँ केवल जल संचयन की संरचनाएँ नहीं थीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र भी थीं। हरियाणा क्षेत्र में स्थित महम की 'ज्ञानी चोर की बावड़ी' इसी परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ज्ञानी चोर की बावड़ी हरियाणा

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

के रोहतक जनपद के महम नगर में अवस्थित है। यह दिल्ली–हिसार मार्ग पर स्थित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। बावड़ी नगर के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा महम के पुराने बस स्टैंड एवं भिवानी स्टैंड से लगभग 300-400 मीटर की दूरी पर स्थित है।[1] ज्ञानी चोर की बावड़ी अपनी स्थापत्य कला एवं जल संरक्षण प्रणाली के कारण विशेष महत्व रखती है।

यह बावड़ी बहुस्तरीय सीढ़ियों, मेहराबों तथा जल तक पहुँचने वाले मार्गों से युक्त है, जो मध्यकालीन स्थापत्य शैली का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है। स्थानीय लोककथाओं एवं जनश्रुतियों में भी इस बावड़ी का विशेष स्थान है, जिसके कारण यह केवल ऐतिहासिक धरोहर ही नहीं बल्कि लोकस्मृति का भी महत्वपूर्ण केंद्र बन गई है। मध्यकालीन काल में ऐसी बावड़ियाँ स्थानीय समाज के लिए पेयजल, विश्राम तथा सामाजिक मेल-जोल का प्रमुख स्थान हुआ करती थीं। महम नगर ऐतिहासिक रूप से व्यापारिक एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है, इसलिए यहाँ निर्मित इस बावड़ी का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। वर्तमान समय में जल संकट एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में यह बावड़ी पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणाली का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त, बावड़ी क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय धरोहर के रूप में भी महत्वपूर्ण है। किंतु वर्तमान में उपेक्षा, जल स्तर में परिवर्तन तथा संरचनात्मक क्षति के कारण इसकी मूल स्वरूप पर संकट उत्पन्न हो रहा है। अतः इस बावड़ी के ऐतिहासिक, स्थापत्य एवं पर्यावरणीय महत्व का अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है।

**शोध के उद्देश्य**

- महम स्थित 'ज्ञानी चोर की बावड़ी' की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं निर्माण संबंधी तथ्यों का अध्ययन करना।
- बावड़ी की स्थापत्य संरचना एवं जल प्रबंधन प्रणाली का विश्लेषण करना।
- ज्ञानी चोर की बावड़ी के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय महत्व को समझना।
- बावड़ी की वर्तमान स्थिति तथा उसके संरक्षण की आवश्यकता का अध्ययन करना।

**शोध पद्धति**

प्रस्तुत शोध मुख्यतः ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत स्थल निरीक्षण,

स्थानीय जनश्रुतियाँ, फारसी अभिलेख तथा क्षेत्रीय अवलोकन को सम्मिलित किया गया है। वहीं द्वितीयक स्रोतों में शोध पत्र, इतिहास संबंधी पुस्तकें, पुरातात्त्विक रिपोर्टें, पर्यटन विभाग के अभिलेख एवं संबंधित प्रकाशित सामग्री का उपयोग किया गया है।

शोध में गुणात्मक (Qualitative) पद्धति को अपनाया गया है, जिसके माध्यम से बावड़ी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्थापत्य संरचना एवं सामाजिक महत्व का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग करते हुए मध्यकालीन जल प्रबंधन परंपराओं के संदर्भ में ज्ञानी चोर की बावड़ी का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के दौरान प्राप्त तथ्यों का समालोचनात्मक परीक्षण कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

**ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**

महम मध्यकाल में दिल्ली और मुल्तान को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग पर स्थित था। इसी कारण यहाँ यात्रियों तथा व्यापारियों के लिए जल-सुविधाओं का विशेष महत्व था। बावड़ी का निर्माण मुगल सम्राट शाहजहाँ के शासनकाल में 1069 हिजरी (1658-59 ई.) में करवाया गया। अभिलेखीय साक्ष्यों के अनुसार इसका निर्माण सैदू कलाल नामक व्यक्ति द्वारा करवाया गया था, जो शाहजहाँ का छोबदार था।[2] ब्रिटिश यात्री पीटर मुंडी ने इस बावड़ी को "सार्वजनिक उपयोगिता का ऐसा स्मारक बताया जो किसी रोमन सम्राट की उदारता के योग्य हो।"[3] यह कथन इस बावड़ी की उपयोगिता और स्थापत्य भव्यता को दर्शाता है। फारसी अभिलेख में बावड़ी को "स्वर्ग का झरना" कहा गया है।

शोधार्थी द्वारा लिया गया फोटो

अभिलेख का अनुवाद इस प्रकार है—

"राजाओं के राजा, विश्व-विजेता के शासनकाल में, स्वर्ग के इस झरने को सैदू द्वारा खुदवाया गया। जब मैंने एक ज्ञानी पुरुष से इसकी तिथि पूछी, तो उसने उत्तर दिया— 'उदारता का जल सदा प्रवाहित रहता है।'"[4] स्थानीय परंपराओं में यह विश्वास प्रचलित है कि बावड़ी से कई भूमिगत मार्ग जुड़े हुए थे। कुछ लोग इन्हें दिल्ली तथा हिसार तक जाने वाले मार्ग बताते हैं। इतिहासकारों के अनुसार मध्यकालीन संरचनाओं में गुप्त मार्गों का निर्माण सुरक्षा तथा आपातकालीन उपयोग हेतु किया जाता था। संभवतः इस बावड़ी में भी ऐसे मार्ग रहे हों। यद्यपि इन मार्गों का पूर्ण प्रमाण उपलब्ध नहीं है, फिर भी ये लोक-विश्वास का महत्वपूर्ण भाग बने हुए हैं। महम की यह बावड़ी उस समय की सामाजिक आवश्यकताओं और स्थापत्य समझ का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है। मध्यकाल में जब यात्रा के साधन सीमित थे और लंबी दूरी तय करने में कई दिन लग जाते थे, तब ऐसी जल संरचनाएँ यात्रियों और व्यापारियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती थीं। यह बावड़ी केवल पानी उपलब्ध कराने का माध्यम नहीं थी, बल्कि लोगों के ठहरने, विश्राम करने और आपसी संवाद का भी स्थान रही होगी। इसकी बनावट से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निर्माणकर्ताओं ने जल संरक्षण के साथ-साथ सुविधा और टिकाऊपन का भी विशेष ध्यान रखा था। स्थानीय परंपराओं और जनश्रुतियों में आज भी इस बावड़ी का उल्लेख मिलता है, जिससे स्पष्ट होता है कि यह संरचना लंबे समय तक क्षेत्र के सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनी रही।

**स्थापत्य विशेषताएँ**

ज्ञानी चोर की बावड़ी मुगलकालीन स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका निर्माण ईंट तथा कंकर से किया गया है। बावड़ी की संरचना उपयोगिता और सौंदर्य दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।[5]

**101 सीढ़ियों की संरचना**

इस बावड़ी में जल तक पहुँचने के लिए 101 सीढ़ियाँ निर्मित हैं। सीढ़ियों के अंतिम भाग में अष्टकोणीय कुआँ स्थित है, जो संरचना का मुख्य भाग है।[6] इस बावड़ी तक पहुँचने के लिए बनाई गई 101 सीढ़ियाँ इसकी संरचना को विशेष बनाती हैं। सीढ़ियों को इस प्रकार तैयार किया गया था कि पानी कम होने पर भी लोग आसानी से नीचे उतर सकें। ऊपर से नीचे की ओर जाती इन सीढ़ियों में संतुलन और गहराई

का विशेष ध्यान रखा गया है। नीचे पहुँचने पर अष्टकोणीय आकार का कुआँ दिखाई देता है, जो इस पूरी संरचना का मुख्य भाग माना जाता है। बीच-बीच में बने खुले स्थानों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ आने वाले लोग कुछ समय रुककर विश्राम भी करते होंगे। वर्तमान में जल स्तर बढ़ने के कारण कई सीढ़ियाँ पानी के भीतर चली गई हैं, फिर भी यह बावड़ी आज भी उस समय की निर्माण कला और जल संरक्षण संबंधी समझ को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

शोधार्थी द्वारा लिया गया फोटो

### बहु-स्तरीय निर्माण

बावड़ी तीन स्तरों में नीचे उतरती है। पहला स्तर भूमि-स्तर से 4.3 मीटर नीचे है, जहाँ 16 सीढ़ियाँ उतरने के बाद पहुँचा जाता है। दूसरा स्तर इससे 4.6 मीटर नीचे स्थित है। इसके पश्चात 12 सीढ़ियाँ और नीचे जाती हैं, जहाँ चौड़ी मेहराब निर्मित है।[7]

### सहायक सीढ़ियाँ और विश्राम स्थल

दीवारों की मोटाई में सहायक सीढ़ियाँ बनाई गई हैं, जो विभिन्न तल तक पहुँचने का मार्ग प्रदान करती हैं। भूमि-स्तर पर कुएँ के पूर्व और पश्चिम भाग में जलाशय सहित चबूतरे निर्मित हैं।[8]

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

### भू-योजना

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा प्रकाशित भू-योजना के अनुसार बावड़ी आयताकार एवं अष्टकोणीय संरचनाओं के संयोजन पर आधारित है। इसकी योजना जल-संग्रहण और दीर्घकालिक उपयोग को ध्यान में रखकर तैयार की गई थी।[७] मध्यकालीन समाज में बावड़ियाँ सामाजिक गतिविधियों का केंद्र होती थीं। महिलाएँ यहाँ जल भरने आती थीं तथा सामाजिक संवाद स्थापित होता था। यात्रियों के लिए यह विश्राम-स्थल का कार्य करती थी। इसके अतिरिक्त, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों में भी बावड़ियों का उपयोग किया जाता था। इस प्रकार बावड़ियाँ सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग थीं।

ज्ञानी चोर की बावड़ी स्थानीय लोक-संस्कृति और जनस्मृतियों में आज भी विशेष स्थान रखती है।

### लोककथा और 'ज्ञानी चोर'

स्थानीय परंपरा में यह बावड़ी 'ज्ञानी चोर' के नाम से प्रसिद्ध है। जनश्रुतियों के अनुसार ज्ञानी चोर एक बुद्धिमान व्यक्ति था, जो अमीरों से धन लेकर गरीबों की सहायता करता था। कहा जाता है कि चोरी के पश्चात अपने घोड़े सहित कुएँ में कूद जाता था। वह बावड़ी के भीतर बने गुप्त मार्गों से निकल जाता था।

शोधार्थी द्वारा लिया गया फोटो

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

लोक-विश्वास यह भी है कि बावड़ी में कहीं गुप्त खजाना छिपा हुआ है। यद्यपि इन कथाओं का प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है, फिर भी ये लोक-स्मृति और सांस्कृतिक परंपरा का महत्वपूर्ण भाग हैं। ज्ञानी चोर की बावड़ी से संबंधित स्थानीय लोक-परंपराओं में एक रहस्यमयी कथा अत्यंत प्रसिद्ध है। जनश्रुति के अनुसार प्राचीन समय में एक बारात दिल्ली जाने के लिए निकली थी। कहा जाता है कि बारात को शीघ्र दिल्ली पहुँचने की इच्छा थी। उसी दौरान लोगों को यह बताया गया कि बावड़ी के भीतर बनी गुफानुमा सुरंगों से होकर जाने पर मार्ग छोटा पड़ता है और जल्दी दिल्ली पहुँचा जा सकता है। लोककथा के अनुसार पूरी बारात बावड़ी के भीतर स्थित उन गुफाओं और सुरंगों में प्रवेश कर गई, किंतु वह बारात फिर कभी वापस नहीं लौटी। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि बावड़ी के भीतर का भाग भूल-भुलैया के समान था, जहाँ अनेक गुप्त मार्ग और सुरंगें थीं। इसी कारण जो लोग भीतर चले जाते थे, उनके लिए बाहर निकलना अत्यंत कठिन हो जाता था। यद्यपि इस कथा का कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है, फिर भी महम क्षेत्र की लोक-स्मृति में यह कथा आज भी प्रचलित है और बावड़ी के रहस्य तथा रोमांच को और अधिक गहरा बनाती है।

**पर्यावरणीय महत्व**

हरियाणा अर्ध-शुष्क क्षेत्र रहा है, जहाँ जल-संरक्षण अत्यंत आवश्यक था। इस संदर्भ में बावड़ियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। ज्ञानी चोर की बावड़ी वर्षा जल संचयन और भूजल संरक्षण की उत्कृष्ट प्रणाली थी। बावड़ी का गहरा ढाँचा जल को लंबे समय तक सुरक्षित रखने में सहायक था। इसके अतिरिक्त, यह स्थानीय तापमान को नियंत्रित करने तथा यात्रियों को शीतल वातावरण प्रदान करने का कार्य भी करती थी। महम क्षेत्र में स्थित ज्ञानी चोर की गुफा केवल एक ऐतिहासिक अथवा लोककथाओं से जुड़ा स्थल मात्र नहीं है, बल्कि यह स्थानीय पर्यावरणीय ज्ञान, जल-संरक्षण परंपरा तथा मानव और प्रकृति के सह-अस्तित्व का महत्वपूर्ण उदाहरण भी प्रस्तुत करती है। इस गुफा और उससे संबंधित बावड़ी संरचना का निर्माण ऐसे समय में हुआ था जब जल-संकट से निपटने के लिए पारंपरिक तकनीकों का प्रयोग किया जाता था। गुफा के आसपास निर्मित जल संरचनाएँ वर्षा जल के संचयन, भूजल पुनर्भरण तथा स्थानीय लोगों की जल आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक थीं।

यह स्थल दर्शाता है कि मध्यकालीन समाज प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति कितना सजग था। गुफा की संरचना में तापमान संतुलन, प्राकृतिक वायु संचार तथा जल संरक्षण जैसी विशेषताएँ देखने को मिलती हैं, जो तत्कालीन पर्यावरणीय समझ को प्रकट करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह स्थान स्थानीय वनस्पतियों, जीव-जंतुओं तथा प्राकृतिक पारिस्थितिकी से भी जुड़ा हुआ था, जिससे क्षेत्रीय पर्यावरणीय संतुलन बना रहता था। वर्तमान समय में बढ़ते शहरीकरण, उपेक्षा तथा प्रदूषण के कारण इस प्रकार की ऐतिहासिक जल संरचनाएँ संकट का सामना कर रही हैं, जिससे न केवल सांस्कृतिक विरासत प्रभावित हो रही है बल्कि पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान भी समाप्त होता जा रहा है। इसलिए जानी चोर की गुफा का संरक्षण केवल ऐतिहासिक धरोहर की रक्षा नहीं, बल्कि पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियों, पर्यावरणीय चेतना तथा स्थानीय पारिस्थितिक संतुलन को संरक्षित करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। मुगलकालीन स्थापत्य में जल-संरक्षण और सौंदर्य का समन्वय स्पष्ट दिखाई देता है। महम की बावड़ी इसी परंपरा का महत्वपूर्ण उदाहरण है।[10]

**वर्तमान स्थिति एवं संरक्षण**

वर्तमान में यह बावड़ी संरक्षित स्मारक घोषित की जा चुकी है। इसे अधिसूचना संख्या 4901 दिनांक 12 फरवरी 1921 के अंतर्गत संरक्षण प्रदान किया गया था।[11] यद्यपि संरचना आज भी विद्यमान है, किंतु इसके अनेक भाग क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। जल-प्रदूषण, अतिक्रमण तथा उपेक्षा इसके संरक्षण के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं। ज्ञानी चोर की बावड़ी में वर्तमान समय में 101 सीढ़ियों में से केवल 23 सीढ़ियाँ ही दिखाई देती हैं। शेष सीढ़ियाँ जलमग्न हो चुकी हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो बावड़ी में जलस्तर अत्यधिक ऊँचा हो गया है। स्थानीय संरक्षणकर्ता श्रीराम शर्मा के अनुसार वर्ष 1995 में क्षेत्र में आई भीषण बाढ़ के दौरान ज्ञानी चोर की गुफा एवं उससे संबंधित बावड़ी परिसर पूरी तरह जलमग्न हो गया था। बाढ़ के कारण यहाँ बड़ी मात्रा में मिट्टी, मलबा तथा गाद जमा हो गई, जिससे इस ऐतिहासिक जल संरचना की मूल बनावट और जल निकासी व्यवस्था प्रभावित हुई। इसके पश्चात् 1996 में भी पुनः पानी भर जाने से स्थिति और अधिक गंभीर हो गई।

यह घटना इस तथ्य को दर्शाती है कि यह स्थल प्राकृतिक जल प्रवाह और स्थानीय पर्यावरणीय तंत्र से गहराई से जुड़ा हुआ था। अतीत में यही संरचनाएँ वर्षा जल संचयन तथा अतिरिक्त जल के संरक्षण का

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

कार्य करती थीं, किंतु समय के साथ उपेक्षा और उचित रखरखाव के अभाव में इनकी संरचनात्मक क्षमता कमजोर पड़ती गई। बाढ़ के बाद वर्षों तक जमा मलबा न हट पाने के कारण गुफा और बावड़ी का पर्यावरणीय एवं ऐतिहासिक स्वरूप प्रभावित हुआ। यह परिस्थिति केवल एक पुरातात्त्विक धरोहर की क्षति नहीं दर्शाती, बल्कि पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियों के धीरे-धीरे नष्ट होने की ओर भी संकेत करती है। अतः ज्ञानी चोर की गुफा का संरक्षण पर्यावरणीय विरासत, स्थानीय जल संरचनाओं तथा ऐतिहासिक धरोहरों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है।

शोधार्थी द्वारा लिया गया फोटो

इस धरोहर के संरक्षण हेतु निम्न कदम आवश्यक हैं—

वैज्ञानिक संरक्षण एवं पुनरुद्धार

- पुरातात्विक अध्ययन
- पर्यटन विकास

- स्थानीय समुदाय की सहभागिता
- ऐतिहासिक अभिलेखों का संरक्षण

**निष्कर्ष:**

ज्ञानी चोर की बावड़ी हरियाणा की मध्यकालीन जल-संरक्षण परंपरा, मुगलकालीन स्थापत्य कला तथा लोक-संस्कृति का महत्वपूर्ण प्रतीक है। यह बावड़ी केवल जल-स्रोत नहीं थी, बल्कि सामाजिक जीवन, यात्रियों की सुविधा तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का भी केंद्र थी। इसकी स्थापत्य विशेषताएँ, फारसी अभिलेख, बहु-स्तरीय संरचना तथा लोककथाएँ इसे विशेष ऐतिहासिक महत्व प्रदान करती हैं। साथ ही, यह मध्यकालीन भारत की पर्यावरणीय समझ और वैज्ञानिक जल-प्रबंधन प्रणाली को भी स्पष्ट करती है। अतः इस धरोहर का संरक्षण और अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

**संदर्भ ग्रंथसूची:**

1. Rohtak District Gazetteer (1910), 43.

2. Subhash Parihar, "Baolis of Punjab and Haryana," Marg 51, no. 1 (Mumbai, 1999): 73.

3. पीटर मुंडी, Pen & Pencil Sketches, Vol. I (London: John Murray, 1832), 354.

4. Subhash Parihar, "Baolis of Punjab and Haryana," 73.

5. Ibid.

6. Ibid., 74.

7. Ibid.

8. Inventory of Monuments and Sites, Part II, Chandigarh Circle (New Delhi, 1999), 79.

9. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, Chandigarh Circle Report, 1999.

10. Subhash Parihar, Marg 50, no. 1, 62.

11. Sunit Duhan, "History runs dry at Shahjahan's Stepwell," The Tribune, August 9, 2025.